खुर पका -मुंह पका (एफ़एमडी)

खुर पका और मुंह पका रोग (एफएमडी) विभाजित खुरों वाले पशुओं जैसे गाय भैंस, सूअर, भेड़, बकरी और हिरण को प्रभावित करने वाला एक विषाणु जनित रोग है।

रोग कैसे फैलता है?

- ग्रसित पशुओं के लार, दूध, वीर्य, आदि से
- संदूषित वस्तुओं, या वाहनों के अतिसंवेदनशील जानवरों के संपर्क मे आने से
- संदूषित घास, चारे और पानी के खाने से
- बेड़े में दूषित कपड़े, जूते या दूषित उपकरणों का उपयोग करने से
- एयरोसोल और हवा के बहाव के माध्यम से एक पशु से दूसरे पशु तक

क्या आप जानते है?

पूरे भारत में 2013 के दौरान एफएमडी के कारण कुल नुकसान का अनुमान 20896 करोड़ रुपये था। यह नुकशान पशु पालको को दुग्ध उत्पादन में कमी, बिजली, पशु चिकित्सा में उपचार लागत शुल्क, प्रभावित जानवरों और संकट से उबरने मे लगे अतिरिक्त श्रम और मृत्यु के कारण उठानी पड़ी।

प्रमुख लक्षण

- 2-3 दिनों तक चलने वाला तेज बुखार
- खुरों के बीच, निपल पर,और मुंह के आसपास छालो और फफोलो का बनना
- मुख से अत्यधिक चिपचिपा या झागदार लार का बहना
- मुंह में दर्दनाक घावों के कारण चारा खाने में कमी
- कभी-कभी गर्भीत पशुओं में गर्भपात

खुर के बीच बने छाले

जीभ पर बने छाले जो फुटकर जख्मी हो गए है

मुख से निकलता हुआ झाग

उपचार

- मुख और जीभ के छालो पर बोरो ग्लिसरीन का लेप लगाए
- पैरो को 4% खाने के सोडा का घोल बनाकर धोये
- पशुओं को तरल भोज तथा हरा चारा ही दे
- **उपचार के लिए अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे**

नियंत्रण

- कीटाणुनाशक से बेड़े के सभी बर्तन, कपड़े और आसपास के वस्तुओं का पूरी तरह से सफाई करे
- प्रभावित परिसर का कम से कम 30 दिनों के लिए इस्तेमाल नहीं करे।
- बिना टीकाकरण किए पशुओं को पशु बाजार में न ले जाए।

रोग प्रकोप होने की दशा में

- संक्रमित पशुओं को अन्य पशुओं से अलग कर दे
- ऐसे पशुओं के लिए अलग चारा और बर्तन और पानी का ईस्तेमाल करे
- संक्रमित पशु के संपर्क मे आए वस्तुओं को 4% धोने के सोडा का घोल बनाकर धोये
- संक्रमित पशुओं को बाहर न चरने दे न ही पशु बाजार ले जाए
- अगर पशु खरीद कर लाए है तो अन्य पशुओं में शामील करने से पहले 1 सप्ताह तक अलग बेड़े में रखे
- फार्म तक किसी भी वाहन को न आने दे और अगर जरूरी हो तो 4% खाने के सोडा से धोने के बाद ही आने दे
- फार्म के प्रवेश द्वार पर फुट डीप का प्रयोग करे

टीकाकरण ही एक उपाय है

पशुओं में टीका की प्राथमिक खुराक 4 महीने की उम्र पर लगवाए

3 महीने बाद बूस्टर खुराक लगवाए।

टीके के अनुसार हर 6- 12 महीने में बाद पुन: टीकाकरण कराये।

अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे

फोटो स्रोत : इन्टरनेट

भाकृअनुप
ICAR

भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान

ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics

पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक

फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in

रापजासूविसं
NIVEDI